अमृत प्रार्थना
भगवान से

हे प्रभु हे अंतर्यामी! जिस प्रकार कोई बालक अपनी तोतली भाषा में माता को,पिता को,अपने भाई बाँधवों को ,अन्य किसी को पुकारता है तो उसका पुकारना भी अन्य स्वजनों को बड़ा प्रिय लगता है। अभी उसके पास भाषा,शब्द विज्ञान,भाव नहीं है। लेकिन फिर भी, उसकी वह तोतली भाषा को,बोली को सुनकर,सारे स्वजन-परिजन बड़े प्रसन्न होते हैं ।

वैसे ही हे नाथ! मुझे भी आध्यात्मिक भाषा,आध्यात्मिक भाव की प्राप्ति नहीं है। मैं तो अपनी टूटी-फूटी भाषा में आपकी स्तुति,आपकी प्रार्थना कर रहा हूँ ।

क्योंकि वेद भी जिसको नेति नेति! कहकर विराम दे देते हैं। बड़े-बड़े ऋषि महर्षि भी जिसकी स्तुति वंदना करने में कहते हैं,और स्वयं सरस्वती जी,और शेषनाग भी अगर
आपकी स्तुति करे तो वह भी पूरी नहीं हो सकती। फिर मुझ बालक की क्या गिनती है !

इसलिए हे प्रभु! मेरी टूटी-फूटी स्तुति को आप स्वीकार करें और मुझपर प्रसन्न हों!

छोटा बालक ,माँ की गोद में ही बार-बार मल मूत्र का त्याग करता है। लेकिन माँ बिना विचलित हुए ही, उसे बार-बार वस्त्र बदलकर,तैयार कर,श्रृंगार कर देती है। वैसे ही अनंत जन्मों से ना जाने मैंने कितने ही पाप किए ।वर्तमान में भी हो रहे और भविष्य में भी होंगे।

लेकिन,जैसे माँ विचलित नहीं होती,वैसे ही हे प्रभु ! आप सदा मेरे पापों को क्षमा करते आए हैं!आज भी क्षमा करें, आगे भी क्षमा करते रहें।* क्योंकि जीव का स्वभाव ही है, वह जीवत्व का जल्दी त्याग नहीं कर पाता।

अब आप ही कृपा करें कि हम जीव से शिव की ओर,
अज्ञान से ज्ञान की ओर,राग से वैराग्य की ओर,विषय से निर्विषयता की ओर गमन करे! संसार से आपकी ओर गमन करें!

क्योंकि भक्तों ने भी कहा है! सुने री मैंने निर्बल के बल राम !! हममें तो बल नहीं,लेकिन आपके बल का सहारा है।

अब आप ही भवसागर से पार कर सकते हैं।

रक्षा करें! रक्षा करें! रक्षा करें!